© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

मनुस्मृति में वनस्पति – विज्ञान

सतीश प्रताप सिंह
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि मानव जीवन में प्रकृति का विशेष महत्त्व रहा है। वैदिक काल से ही भारतीय ऋषियों व मनीषियों ने वृक्षों को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। वनस्पति जगत को पूजनीय मानते हुए उनके पूजा अर्जन का भी विधान किया है। वृक्ष और लतायें जहाँ प्रकृति के सुरम्य रुप को रहस्योदघाटित करती हैं वहीं मानव जीवन में प्राणवायु का भी संचार करती हैं। वनस्पतियों का औषधीय महत्त्व सर्वविदित है।

वेदों, उपनिषदों, पुराणों, काव्यों एवं स्मृतियों में वनस्पति संरक्षण के प्रति संचेतना परिलक्षित होती है। वेदों में पीपल के वृक्ष को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। वनस्पतियाँ मानव जीवन का आधार हैं। अथर्ववेद में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि ''जो औषधियों और वनपतियों को नष्ट कर पृथ्वी को सतातााा है उन्हें पृथ्वी भी पीड़ित करती है एवं नष्ट कर देती है।''

अश्व इव राजो दुधुवे वि तान् जनान् य आक्षियान पृथिवीं यादजांयत।
मन्द्राग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां गृभिरोषधीनाम्।।[1]

मनुस्मृति में भी वनस्पति–विज्ञान के विभिन्न उपादानों की चर्चा के साथ ही मानव जीवन में इसकी उपयोगिता पर बल दिया गया है।

वनस्पति–विज्ञान का अर्थ–

संस्कृत वाङ्मय के परिशीलन से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वनस्पति–विज्ञान प्राचीनकाल से ही अध्ययन, अध्यापन और लेखन का विषय रहा है।

वनस्पति–विज्ञान दो शब्दों वनस्पति और विज्ञान से मिलकर बना है। वनस्पति का अर्थ है, पेड़ पौधे एवं विज्ञान का अर्थ है–'विशेष ज्ञान अतः **वनस्पति–विज्ञान का अर्थ है–पेड़ पौधों का विशेष ज्ञान।**

पौधों से संबंधित सभी प्रकार का अध्ययन वनस्पति–विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। वनस्पतियों के विषय में अच्छी जानकारी होने से जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का भी ज्ञान होता है। वनस्पतियाँ धरती पर जीवन के मूलभूत अंश है। वनस्पतियाँ आक्सीजन छोड़ती है। मानव और अन्य जन्तुओं का भोजन वनस्पतियों से ही प्राप्त होता है।

मनु ने वनस्पतियों में चैतन्य को स्वीकार किया है तथा कहा है कि–''जब जीव के त्रिगुणों में तमस गुण का आधिक्य होता है तो वह जीव इस योनि को प्राप्त करता है।''

त्रिर्यक्वं तामसा नित्यमित्येषा त्रिविधागतिः।।[2]

'तमोगुण से युक्त ये वनस्पतियाँ अन्तश्चेतना एवं सुख–दुःख से युक्त होती हैं। स्मृतियाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष, पौधों फल, फूल आदि विशेष ज्ञान की उपनिधि हैं।

मनु ने रात में वृक्षों के नीचे सोने का निषेध किया है–

रात्रौ च वृक्ष मूलानि दूरतः परिवर्जयेत्।[3]

आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी वृक्ष के नीचे शयन को अनुचित बताया है क्योंकि वृक्षरात्रि में कार्बनडाइआक्साइड छोड़ते है जिनका मानव स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ता है।

मनु ने उद्भिज्ज वनस्पतियों के अन्तर्गत वृक्ष, गुल्म, लता, फल, गुच्छ, फूल, प्रतान, बीज तृण आदि का उल्लेख किया है–

उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्प्ररोहिणः।
ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः।।
अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः।
पुष्पिणः फलिनश् चैव वृक्षास् तूभयतः स्मृताः।।
गुच्छगुल्मं तु विविधं तथैव तृणजातयः।
बीजकाण्डरुहाण्येव प्रताना वल्ल्य एव च।।[4]

मनु ने वनस्पतियों को विशेष महत्त्व देकर वनस्पतियों के संरक्षण का विशेष विधान किया है। मनु ने वर्णानुसार वृक्षों की लकड़ियों के प्रयोग पर बल देते हुए कहा है कि ब्राह्मण ब्रह्मचारी बेल या पलाश का क्षत्रिय ब्रह्मचारी वट या खैर का, वैश्व ब्रह्मचारी को पीलू या गूलर का दण्ड धारण करना चाहिए। क्योंकि ये लकड़ियों औषधि के रुप में प्रयोग नहीं होती थी तथा प्राकृतिक संतुलन भी बना रहता था।

ब्राह्मणौ बैल्वपलाशों क्षत्रियों वाटखदिरौ।
पैलवौटुम्बरौ वैश्यो दण्डानर्हन्ति धर्मतः।।[5]

मनु ने सीमा निर्धारण के लिए शाल्मली साल, गूलर, अश्वत्थ आदि दीर्घ एवं पक्की लकड़ियों से युक्त वृक्षों को सीमा पर लगाने का विधान किया है। क्योंकि इनकी जड़े अत्यन्त गहरी होती जिससे ये सजह रुप से उखाड़े नहीं जा सकते।

इसके अतिरिक्त मनु ने बड़, पीपल, पलाश, सेमल, ताड़, गुल्म आदि सीमा पर लगाने का आदेश राजा को दिया है–

सीमावृक्षांश्च कुर्वीत न्यग्रोधाश्वत्थकिंशुकान्।
शाल्मलीसालतालांश्च क्षीरिणश्चैव पादपान्।।[6]

मनु ने वनस्पतियों का प्रयोग चिकित्सा के क्षेत्र में किया है तथा वनस्पतियों को निष्प्रयोज्य काटने एवं नष्ट करने पर प्रायाश्चित्त एवं दण्ड का भी विधान किया है।

मनु ने वन में स्वोत्पन्न औषधियों को निष्प्रयोजन काटने पर केवल दूध का आहार लेकर गौ का अनुगमन करने का निर्देश दिया है।

कृष्णजानामोषधीनां जातानं च स्वयं वने।

वृथालम्भेऽनुगच्छेदां दिनमेकं पयोव्रतः।।[7]

मनु ने फल–फूल तथा लकड़ी आदि की चोरी को निकृष्ट माना है तथा इसे मलिन कर्मों की श्रेणी में रखा है।

फलकाष्ठपुष्पाणां च चौर्यमल्पेऽपच्येऽप्यत्यन्तवैक्लष्यम्।

एतत्सर्वं प्रत्येकं मलिनीकरणम्।।[8]

मनु ने ईंधन के लिए हरे वृक्ष को काटने का निषेध करते हुए इसे उपपातक कहा है–

इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्।।[9]

मनु ने प्रायश्चित्त कर्म के रुप में जड़ी बूटियों को उबालकर पीने का विधान किया है।[10]

मनु ने उत्तम स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी भोजन पर बल दिया है उनके अनुसार भूमि तथा जल में उत्पन्न शाक को, वृक्षों के पुष्प, मूल तथा फलों से बने भोजन को करने का निर्देश दिया है।

स्थलजौदकशाकानि पुष्पमूलफलानि च।

मेध्यवृक्षेद्भवान्यद्यात्स्नेहांश्च फलसम्भवान्।।[11]

मनु ने स्व पके हुए फलों को स्वास्थ्य के लिए उत्तम बताया है क्योंकि कृत्रिम रुप से पकाये गये फल स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते है। अतः मनु ने वानप्रस्थियों को समय पर पके हुए फलों, फूल तथा मूल से जीवन निर्वाह का सुझाव दिया है–

पुष्पमूलफलैर्वापि केवलैर्वतयेत्सदा।

कालपक्वैः स्वयंशीर्णैवैखानसमते स्थितः।।[12]

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है। मनु ने केवल वनस्पति विज्ञान से परिचित थे अपितु सूक्ष्म ज्ञाता भी थे। वनस्पतियाँ मानव जीवन के लिए परमोपयोगी हैं जहाँ पीपल, दूब, तुलसी कुश आदि परम–पवित्र तथा औषधियों के रुप में प्रयुक्त होने के कारण पूजनीय है वहीं अन्य लकड़ियाँ आवास बनाने में सहायक है। मनुष्य निरन्तर प्रकृति से छेड़छाड़ करके वनस्पतियों का नुकसान पहुँचा रहा है जो मानवअस्तित्व के लिए चिन्ता का विषय है। अतः वृक्षों के संरक्षण पर मनु ने विशेष बल दिया है। प्रकृति को भोग्या न मानकर उसे देवी या सहचरी के रुप में समझने की आवश्यकता है। वनस्पतियाँ मानव–जीवन का आधार है अतः उनका संरक्षण मानव का परम–कर्तव्य है। वनस्पतियों के उचित संरक्षण एवं रखरखाव से ही उत्तम स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अथर्ववेद–12 / 1 / 57
2. मनुस्मृति–2 / 40
3. मनुस्मृति–4 / 73
4. मनुस्मृति–1 / 46–48
5. वही–2 / 45
6. वही–8 / 246
7. वही–11 / 144
8. वही–11 / 70
9. वही–11 / 64
10. वही–11 / 146–148
11. वही–6 / 13
12. वही–6 / 13